PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 3, ISSUE 1

# भूषण और उनके काव्य की विशेषताएँ

**डॉ. हनुमंत दशरथ जगताप**
हिंदी विभाग प्रमुख,
न्यु आर्ट्स,कॉमर्स एण्ड साइंस
कॉलेज अहमदनगर
**महाराष्ट्र भारत**

हिंदी साहित्य के रीतिकालीन कवियों में कविवर भूषण का नाम अग्रगण्य हैं। हिंदी के इस सुप्रसिध्द कवि का जन्म सं. १६७० मे उत्तर- प्रदेश के तिकवॉपुर गॉव में हुआ था । उनके पिता रत्नकर त्रिपाठी के चार पुत्र—चिंतामणी, भूषण ,मतिराम और निलकंठ थे। स्वयं कवि ने अपनी काव्य रचना 'शिवराजभूषण' में अपने नाम के संदर्भ मे स्पष्ट किया है कि उनका वास्तविक नाम मतिराम था, किंतु चित्रकुट के राजा ह्रदयराम के पुत्र रुद्र सोलंकी ने इनकी कविता से प्रसन्न होकर इन्हे भूषण की उपाधि से सम्मानित किया और तभी से इन्हें कवि भूषण के नाम से पहचाना जाने लगा। यह सत्य हैं कि कवि भूषण अपने काल के अनेक राजाओं के राजाश्रय में रहे, पर अपने स्वतंत्र स्वभाव के चलते इनका किसी के साथ मन नही मिला। परन्तु अन्त में कवि भूषण ने छत्रपति शिवाजी और पन्ना नरेश छत्रसाल को अपने विचारों के अनुकूल पाकर अपना अधिक से अधिक समय इन दो हिंदू राजाओं के साथ बिताया । कहा जाता है कि इनकी प्रतिष्ठा बढाने के लिए एकबार महाराज छत्रसाल ने इनकी पालकी में अपना कंधा भी लगा दिया था, जिसे देखकर कवि भूषण गद्‌गद् हो पालकी से कूद पडे और उन्होंने कहा—

**"आन राव राजा एक मन में न ल्याऊँ अब,**
**साहू कौं सराहौं कैं सराहौं छत्रसाल कौं। "**

कवि भूषण ने अनेक काव्यों की रचना की किन्तु आज उनके तीन ग्रंथ मिलते है - शिवराजभूषण, शिवाबावणी, छत्रसालदसक। भूषण की सभी रचनाएँ वीर रस प्रधान हैं। वास्तव में जहॉ रीतिकालीन कवियों में श्रृंगार के प्रति विशेष आकर्षण देखा जाता है वहीं भूषण जैसा कवि वीररस प्रधान कविता लिखने मे व्यस्त दिखाई देता है। यह वह समय था जब चेतनाशून्य, अकर्मण्य राजाओं के आश्रय में रहकर कविलोग मनोरंजन की अनेक सामग्री जुटा रहे थे। गवैंयों, भाटों, चितेरों के समान कवि भी आश्रय के लिए इधर उधर दौंडते फिरते थे। कविता सुनना इन राजाओं के लिए एक मनोरंजन मात्र ही था। एक दूसरे की देखादेखी सभी छोटे-मोटे-राजा-रजवाडे अपने मनोरंजन के लिए दरबार में कवि रखने लगे थे। इसीलिए रीतिकाल के प्राय: सभी कवि राज्याश्रित रहे हैं। लगभग दो सदियों तक हिंदी में रीतिबध्द शृंगार साहित्य ही पनपता रहा और कविगण काव्य के बाह्य चमत्कार में ही लगे रहे। ऐसे समय में वीर रस प्रधान कविता रचने वाले भूषण का प्रादुर्भाव एक आश्चर्यकारक घटना ही है।

वास्तव में प्रखर राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर अन्याय तथा दमन के विरूध्द् आवाज उठाने वाले पहले कवि भूषण ही हैं। किसी भी देश और जाति के उत्थान में उसके कवियों का स्थान बहुत ऊँचा होता है। सुकवि के हाथों में ही देश और जाति की डोर होती है।

वह समय और स्थिति के अनुकूल कभी व्यंग से, कभी शब्दों की फटकार से, तो कभी प्रेम से जनता के हृदय में विद्रोह का बीज बोता है। देश की इस विषम परिस्थिति में कवि भूषण ने छत्रपति शिवाजी को अपना आदर्श बनाकर देश और जाति की स्वतंत्रता के लिए उनका उसी प्रकार गुणगान किया जिस प्रकार तुलसी ने राम का और सूर ने कृष्ण का गुणगान किया था। कवि भूषण स्पष्ट रूप से मानते थे कि यदि औरंगजेब के समय में शिवाजी जैसा वीर योद्धा न हुआ होता तो हिंदु-जाति का नामोनिशान न रहता । ऐसे समय में शिवाजी ने हिन्दु-जाति के आश्रयदाता बनकर उनकी लाज रखी है—

**''दसरथ राजा राम भो, बसुदेव के गुपाल ।**
**सोई प्रगट्यौ साहि के,श्री सिवराज भुआल ।।''**

वास्तव में भूषण को हिंदुओं की असहाय तथा पतानावस्था अखरती थी। उनकी यह जातीयता राष्टीयता के भाव से प्रेरित थी। माना की रीतिकाल के अन्य कवियों की भाँति वे भी राजाश्रीत थे परंतु अपने आश्रयदाता से केवल धन पाना उनका एक मात्र उद्देश्य नहीं था। उसीलिए तो उन्होंने अपने आश्रयदाता के व्यक्तिगत जीवन से संबंध रखनेवाली घटनाओं पर एक पंक्ति तक नहीं लिखी। उन्होंने तो अपने आश्रयदाता के राष्ट्रीय रूप का ही चित्रण किया है। उनकी कविताओं में मुगलों की उच्छृंखलता, उदंडता और अनाचार का स्पष्ट चित्र दिखाई देता है। उनकी जातीय भावना संकीर्ण या संकुचित नहीं हैं बल्कि वे शिवाजी को समस्त देश का उद्धारक और राष्टीय नेता मानते हैं —

**''तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर**
**यौं मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं ।''**

देखा जाये तो भूषण की कविता में राष्ट्र के हृदय को आंदोलित करने की अभूतपूर्व शक्ति है। ऐतिहासिक दृष्टिकोन को प्रमुखता देते हुए उन्होंने अपने काव्य में शिवाजी के व्दारा लडे गए युद्ध और उनकी विजय का ओजपूर्ण वर्णन किया है। शिवाजी उनके आदर्श है, जो प्रतापी ओजस्वी और वीर नेता हैं। जबकि औरंगजेब प्रतिनायक है। कवि भूषण के युद्ध वर्णन स्वाभाविक तथा तत्कालीन परिस्थिति का सजीव और चित्ताकर्षक चित्र उपस्थित करनेवाले है।

भारतवर्ष के उत्तर प्रदेश मे जन्म लेकर भी कवि भूषण ने शिवाजी के स्वराज्यस्थापना से प्रेरित होकर उनको अपने काव्य का विषय बनाया और उनका चित्रण चमत्कारी महापुरूष तथा आदर्श नायक के रूप मे किया, किन्तु उन्होंने शिवाजी का गुणगान गाकर भी उन्हे अवतार की कोटि से दूर ही रखा । विचार किया जाए तो तत्कालीन राष्ट्रीयता का स्वरूप वर्तमान कालीन राष्टीयता से भिन्न था। यदि तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर भूषण के काव्य पर विचार किया जाये तो यह स्पष्ट हो जाता हैं कि भूषण एक विद्रोही , क्रांतिकारी तथा सच्चे राष्ट्र कवि थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में इतिहास और साहित्य का सुंदर समन्वय स्थापित किया है। स्पष्ट हैं कि भूषण ने अपने ओजस्वी और वीर रस प्रधान काव्य के व्दारा देश के प्रसुप्त वातावरण को जागृत करने का महान कार्य किया है।

# संदर्भ सूची

१. भूषण : ऐतिहासिक एवं साहित्यिक अनुशीलन-डॉ.भगवानदास तिवारी
२. भूषण ग्रंथवली : शिवनाथप्रसाद मिश्र
३. भूषण का प्रशस्ति काव्य : सौ.रमा नवले